रात में दीवाना हो गया है इसका." मंजू मेरे नितंबों पर हाथ फ़िरते हुए बोली.

मां ने मुझे पूछा "रघू ने कैसा प्यार किया तुझे बेटे? तकलीफ़ तो नहीं दी?" उसकी आंखों में चिंता के साथ साथ एक उत्तेजना भी थी.

मैं क्या कहता? रघू के लंड ने मेरी गांड को जैसा दुखाया था उसके कारण कहने वाला था कि मां बहुत दुखा, रघू ने तो मेरी गांड करीब करीब फ़ाड़ ही दी. पर यह भी याद आया कि क्या मजा आया था रघू से मरवा कर और उसका लंड चूस कर. रघू की गांड मार कर जो आनंद मिला था वह भी मेरे दिमाग में ताजा था. और रघू मुझे कितना प्यार करता था यह भी मैं जानता था.

मैं बोला. "बहुत मजा आया अम्मा, रघू और मंजू बाई ने मिलकर बहुत मस्त प्यार किया मुझे. थोड़ी बदन दुख रहा था और थक गया था इसलिये स्कूल नहीं गया आज . इन्हें भी सोने दो मां अपने साथ, मजा आयेगा."

मां आश्वस्त हुई पर उसकी आंखों में एक प्रशंसा की भावना थी. उसे मालूम था कि रघू ने मेरे साथ क्या किया होगा! सोच रही होगी कि उसके बित्ते भर के बच्चे ने आखिर कैसे रघू का लंड झेला होगा?

रात का खाना जल्दी खतम कर के हम सब मां के कमरे में आने की तैयारी करने लगे. रघू के कुरते में से बड़ा तंबू दिख रहा था. मां और मंजू उसे देख कर हंस रही थीं. दिन भर के आराम से रघू का लंड मस्ता गया था. उधर मां और मंजू भी बार बार एक दूसरे को चिपट लेती थीं. उनसे भी रहा नहीं जा रहा था. दो दिन के आराम से लगता है, मां भी एकदम गरमा गयी थी.

रघू मुझे गोदी में उठाकर चूमता हुआ मां के कमरे में लाया. अंदर आते ही उसने मेरे कपड़े उतारने शुरू कर दिये. उधर मंजू भी फ़टाफ़ट नंगी हो गयी. मेरे तने लंड को रघू ने चूमा और अपनी धोती कुरता उतारकर नंगा हो गया. उसका महाकाय लंड एकदम तन कर खड़ा था.

मां हम सब को देख रही थी. वह भी इतनी गरमा गयी थी कि पलंग पर बैठी बैठी अपनी जांघें रगड़ते हुए हमें देख रही थी. मेरे लंड को वह बड़ी भूखी नजरों से देख रही थी. मेरा लंड रघू के लंड का तिहाई होगा पर मेरी मां को अपने प्यारे बच्चे का लंड मिठाई जैसा लग रहा होगा.

"अम्मा, तुम भी कपड़े निकालो ना!" मैंने मचल कर कहा.

"क्यों नालायक, अपनी मां की चूचियां और बुर देखने को मरा जा रहा है? अरे मैं तेरी मां को नंगा करूंगी तेरे सामने. रघू बेटे, मुन्ना को गोद में ले ले और पकड़ कर रख, नहीं तो अम्मा की जवानी देख कर मुठ्ठ मारने लगेगा शैतान" मंजू मां को पकड़ कर उसकी साड़ी खींचती हुई बोली.

अम्मा इतरा कर नहीं नहीं करती रह गयी पर मंजू ने उसकी साड़ी और चोली खोल डाली. अंदर मां ने आज सफ़ेद ब्रा और पैंटी पहनी थी. टाइट ब्रा में से उसके ये मोटे मम्मे छलक आये थे. मोटी मोटी गोरी जांघें और पैंटी में से दिखते बुर के उभार को देखकर मैं मचल उठा. अपने आप मेरा हाथ अपने लंड पर गया. रघू ने हंसते हुए मेरे दोनों हाथ पकड़ लिये और मुझे गोद में लेकर कुर्सी पर बैठ गया. उसका लंड मेरी पीठ पर सटा था. उसे मेरी पीठ पर रगड़ते हुए वह मेरे गाल चूमने लगा.

उधर मंजू अब मां की ब्रा उतार रही थी. मां के भारी भरकम स्तन ब्रेसियर से छूटकर लटकने लगे. लगता था जैसे सफ़ेद पके पपीते हों. और मां के निपल! मैं देख कर कसमसा उठा. इतने बड़े निपल किसीके हो सकते हैं ये मैंने कभी सोचा भी नहीं था. बड़े जामुनों के आकार के गहरे भूरे रंग के निपल और उनके चारों और छोटी तश्तरी जितने बड़े बड़े गोल चकते!

"देख मुन्ना, क्या मस्त माल है, और बहुत मीठा भी है" मुझे मां के मम्मों को घूरता देखकर मंजू ने मुझसे कहा और मां की एक चूची चूसने लगी. साथ ही उसने मां की पैंटी खींचकर उतार दी. काले बालों से भरी उसकी गोरी बुर

देखकर मैं पागल सा हो गया.

मंजू मुंह अलग करके चटखारे लेते हुए बोली. "बहुत मीठा दूध है मुन्ना तेरी मां का, एकदम दुधारू गाय है साली. इसके निपल देखे ना? गाय है गाय!"

मैं तड़प कर बोला. "मां, मुझे दूध पिला ना."

अब तक मां भी चुदासी से सिसकने लगी थी. "जरूर पिलाऊंगी मेरे लाल, मेरे पास ला मंजू मेरे बच्चे को."

"हां हां क्यों नहीं, पर पहले बेटे से मां की पूजा कराऊंगी. खास कर चूत की पूजा. रघू, मुन्ना को इधर ला. आखिर उसे पास से देखने दे कि उसकी मां की चूत कैसी है, जहां से वह जन्मा है, उस छेद को जरा चूमे और चूसे, फ़िर दूध भी पिला देंगे." मंजू मां के मम्मे दबाती हुई बोली.

रघू मुझे उठा कर पलंग पर ले गया. मुझे उतारकर मां के पास खड़ा होकर बोला. "पहले मेरा लौड़ा चूसो मांजी. आपके बेटे के सामने आपके मुंह में लंड दूंगा. इसने मेरी मां को तो देखा कि कैसे मेरा पूरा लंड मुंह में ले लेती है. अब जरा यह भी देखे कि इसकी चुदैल मां लंड चूसने में कितनी माहिर है. फ़िर इसे भी सिखा दूंगा" कहके वह अपना लंड मां की चूचियों पर रगड़ने लगा.

मंजू ने मां के कंधे पकड़कर उसे जमीन पर बिठा दिया. उसके पीछे बैठकर उसकी चूचियां मसलती हुई पीछे से मां की ज़ुल्फ़ें उठाकर मां की गर्दन चूमने लगी. मां एकदम मस्त थी. सिहर कर बोली. "कितना अच्छा चूमती है तू मंजू, जरा मेरी बुर खोद ना."

उधर रघू को जल्दी हो रही थी. उसने मां के गाल दबाकर उसका मुंह खोला और दूसरे हाथ से लौड़ा पकड़कर मां के मुंह में पेल दिया. मुझे लगा मां का दम घुट जायेगा उस हलब्बी लंड को लेने में पर उसने तो दोनों हाथ रघू की कमर में डालकर उसे अपने पास खींच लिया और एक ही दम में पूरा लंड निगलकर अपना चेहरा रघू के पेट में दबाकर लौड़ा चूसने लगी.

मैं पास से देख रहा था. मां का मुंह बाया हुआ था और उसके लाल लाल होंठ रघू के लंड की जड़ के चारों ओर सिमटे हुए थे. आंखों में गजब के कामुकता थी. रघू ने मां का सिर कस कर पकड़ा और खड़ा खड़ा आगे पीछे होकर मां के गले को चोदने लगा.

यह नजारा ऐसा था कि मैं सह न सका और पास जाकर बाजू से मां को चिपटकर उसके गाल चूमते हुए अपना लंड मां की कमर पर घिसने लगा. मंजू ने मुझे दूर किया और हंसने लगी. "अरे झड़ जाओगे मुन्ना, ये क्या करते हो. देखा अपनी छिनाल रंडी मां को? कैसी मरती है मेरे बेटे के लंड पर? कैसे गप से निगल लिया दस इंची लंड देखा ना तूने?"

मैं मचल कर बोला. "मंजूबाई मैं भी ऐसा ही लूंगा रघू का लंड अपने मुंह में. रघू मुझे सिखा ना"

रघू मां के मुंह को चोदते हुए बोला. "अगली बार सिखा दूंगा मुन्ना, टाइम लगेगा ऐसा सिखाने में. पर अभी तो तेरी मां का मुंह चोद लूं, साली बहुत मस्त चूसती है मालकिन. ऐसे निगलती है जैसे जन्म जन्म की प्यासी हो."

मंजू रघू को बोली "अब रुक जा बेटे, झड़ मत. आगे का काम करने की तैयारे कर. जरा इस नन्हे गांडू को अपनी मां की बुर की सेवा करने दे. और लंड भी आज ही चुसवा दे, बेचारे को ऐसे तड़पा मत. तू भी तो बार बार कहता था मुझसे कि मां, मुन्ना के कोमल कमसिन गले में पूरा लंड उसके पेट तक न उतार दूं तब तक चैन नहीं मिलेगा मुझे"

रघू ने गहरी सांस ली और मंजू की बात मानकर अपना लंड मां के मुंह से निकाल लिया. अब वह और सूजकर लाल हो गया था. "हां मां, आज ही सिखा देता हूं, पर एकाध बार झड़ कर थोड़ा छोटा हो जाये, ये मूसल तो

मंजू बोली. "पहली बार अपनी मां की गांड मार रहा था मुन्ना, जल्दी झड़ेगा ही. तू फ़िक्र मत कर मुन्ना, अगली बार अकेले में रात भर गांड मारना तेरी छिनाल मां की, तब इसे शांति मिलेगी. अब रघू बेटे, तू शुरू हो जा. बच्चे से मरवा कर ये चुदैल खुश हो रही है. जरा तेरे मूसल से मरवाये, फ़िर जानूं."

"हां हां, डाल दे रघू, मैं डरती हूं क्या, चल आ जा मैदान में" मां अब तैश में थी. अपनी बुर में उंगली कर रही थी. मुझे हटाकर रघू ने पहले उसकी गांड चूसी. "अब तो माल है मालकिन आपकी गांड में, मुन्ने की मलाई है, उसे तो चख ही सकता हूं." कहकर मां के गुदा को चाटने के बाद उसने मख्खन से मां की गांड चिकनी की. दो तीन लोंदे गांड में डाल दिये. मंजू ने अपने बेटे के लंड पर भी खूब मख्खन लगा दिया और फ़िर सिरहाने अपनी टांगें पसार कर बैठ गयी.

"मालकिन, अब आप मेरे बुर चूसो आराम से, रस का मजा लो. इससे दर्द कम होगा." कहकर मंजू ने मां का सिर अपनी बुर में डाल लिया और उसे चिपटाकर आगे पीछे होती हुई मां के मुंह पर मुठ्ठ मारने लगी.

रघू ने बड़े प्यार से मां के नितंब पकड़कर फ़ैलाये और अपना सुपाड़ा जोर लगाकर अंदर डाल दिया. मां का शरीर सिहर उठा और मंजू की बुर में से ही दबी आवाज में वह चिल्लाई. "उई ऽ मां ऽ, मार डालेगा रे रघू मुझे क्या? लंड है या सोंटा?"

रघू मां की चुत को उंगली से सहलाने लगा. "बस मालकिन, अब दर्द नहीं होगा. आपने खुद देखा कैसे मुन्ना ने भी आसानी से मेरा ले लिया था. अब आप आराम से मेरी अम्मा की बुर चूसो, मैं बड़े प्यार से आपको अपना लौड़ा देता हूं."

धीरे धीरे रघू ने अपना लंड मां के गोरे गोरे चूतड़ों के बीच गाड़ दिया. वह बहुत प्यार और सावधानी से यह कर रहा था. मेरी मारते हुए भी उसने इतनी सावधानी नहीं बरती थी जितनी वह मां की गांड में लंड घुसाते समय बरत रहा था. मां जरा भी कसमसाती तो वह रुक जाता.

पूरा लौड़ा घुसा कर वह रुका और फ़िर उसे धीरे धीरे मुठियाने लगा. "दर्द तो नहीं हो रहा मालकिन" रघू के पूछने पर मां कुछ नहीं बोली, मंजू की बुर चूसती रही. अब वह अपने आप अपने चूतड़ उछालने की कोशिश कर रही थी. मंजू मुस्कराकर बोली "अरे देखता नहीं कैसे मस्त हो गयी है ये रंडी? अब मार आराम से, साली खूब मरायेगी अब देखना. फ़ालतू नखरा कर रही थी. एक बार चस्का लग गया, मुन्ना, तू देखना अब गांड मराना ज्यादा पसंद करेगी तेरी अम्मा"

रघू तुरंत मां पर चढ़ गया और उसपर लेट कर घचाघच मां की गांड मारने लगा. उसके लंबे तगड़े लंड के गुदा में अंदर बाहर होते ही मां फ़िर कसमसा उठी. पर मंजू ने उसका मुंह अपनी चूत पर दबा कर रखा कि वह कुछ बोल न पाये. मुझे बोली. "मुन्ना, जरा अपनी मां की चूत में उंगली कर बेटे. उसका दाना रगड़ जैसा मैंने सिखाया था. अभी और मस्त हो जायेगी."

मैं बिस्तर पर बैठकर मां की बुर में उंगली घुसेड़कर अंदर बाहर करने लगा. चूत गीली थी. अब मैंने जब मां का दाना पकड़कर मसला तो चूत में से पानी बहने लगा. मां का दबे मुंह कराहना बंद हो गया और वह अपने चूतड़ हिला कर मेरी उंगली और अंदर लेने की कोशिश करने लगी.

रघू अब तक तैश में आ गया था. बोला. "चलो हटो तुम दोनों. अब मैदान में मैं हूं और मालकिन है. अब दिखाता हूं गांड मारना क्या होता है! हाय हाय क्या गुदाज नरम नरम गंड है मुन्ना तेरी अम्मा की, लगता है मुलायम स्पंज में लौड़ा पेल रहा हूं"

मंजू उठकर बाजू में बैठ गयी और मुझे अपनी गोद में बिठा लिया. मेरे मुंह में अपनी चूची देकर वह खुद मुठ्ठ मारने लगी. "मुन्ना मेरी चूची चूस और तमाशा देख अब. मैं उंगली करती हूं, तू मेरा दाना पकड़" मंजू को सड़का लगाने में मदद करता हुआ मैं मां की गांड मारी जाने का तमाशा देखने लगा.

अगले आधे घंटे तक रघू ने मां की गांड ऐसे चोदी जैसे फ़ाड़ डालेगा. मां को दबोच कर उसके मम्मे पकड़कर मसलता हुआ वह पूरे जोर से मां की गांड मार रहा था. बस सांस लेने को बीच में एकाध मिनिट रुक जाता. मां भी अब आंखें बंद करके बिलबिला रही थी और अपनी ही चूत में उंगली कर रही थी. उसके चेहरे पर वेदना भी थी और उतनी ही वासना भी थी. "मर गयी रघू बेटे, तूने मेरी फ़ाड़ दी राजा. पर बहुत मजा आ रहा है रे, रुक मत, लगा जोर से धक्का, फ़ाड़ दे मेरी गांड और घुस जा उसमें. हा ऽ य रे ऽ"

आखिर रघू जब झड़ा तो जोर से चिल्लाया. फ़िर लस्त होकर मां पर ढेर हो गया. मां तैश में थी. अब भी गांड चुदाने की कोशिश कर रही थी. बेचारी की यह हालत देख कर मंजू बोली. "रघू, पलट जा और मालकिन को ऊपर ले ले. मुन्ना को कहती हूं कि अपनी मां को चोद डाले और झड़ा दे."

मैं मां पर चढ़ कर उसे चोदने लगा. मां ने मुझे बांहों में भर लिया और मेरा मुंह चूमने लगी. रघू का लंड अब भी मां की गांड में फ़ंसा था इसलिये चूत खूब टाइट थी. मां की गांड चुदती देखकर मैं ऐस उत्तेजित था कि मैंने मन लगाकर जोर जोर से मां को खूब चोदा. अब तक मैं भी चोदने में काफ़ी उस्ताद हो गया था इसलिये बिना झड़े मैंने तब तक मां को चोदा जब तक वह दो बार झड़ कर लस्त नहीं हो गयी.

"मुन्ना झड़ मत यार, आ मेरी मां की गांड मार ले अब. मेरा फ़िर खड़ा हो गया है, मैं तेरी मां की फ़िर मारता हूं. अम्मा, आज अब रात भर मैं मालकिन की गांड ही मारूंगा. मजा आ गया! तुम जरा मुन्ना को अपनी गांड दे दो" रघू के कहने पर मैंने मंजू की गांड में लंड डाला और मारने लगा.

रघू उठकर मां को बांहों में लिये कुरसी में बैठ गया और मां को गोद में बिठा लिया. मां के मम्मे दबाता हुआ वह मां को चूमने लगा. मां लस्त उसकी गोद में आंखें बंद करके बैठी थी. रघू मां का मुंह खोल कर उसके मुंह में जीभ डालकर मां का मुखरस चाट रहा था. मुझे नीचे से मां के चूतड़ों में धंसा उसका मोटा लंड दिख रहा था. मां की झड़ी चूत भी एकदम खुली थी और उसमें से पानी बह रहा था.

मंजू ने मेरी ओर देखा और मुस्करा कर बोली. "खजाना देख रहा है अपनी मां का? मेरे भी मुंह में पानी आ रहा है. चल चाटते हैं."

हम दोनों मां के सामने जमीन पर बैठ गये और बारी बारी से उसकी बुर चाटने लगे. मंजू मेरी गोद में बैठी थी और मेरा लंड उसकी गांड में फ़ंसा था. उसे धीरे धीरे उचक कर मंजू की गांड चोदते हुए मैं मां के चूत के रस पर हाथ साफ़ कर रहा था.

मां की चूत चाटकर उसे फ़िर मस्त करके चुदाई आगे शुरू हुई. अब हम एक ही पलंग पर पास पास लेट कर एक दूसरे की मां की गांड मार रहे थे.

झड़ने के बाद सब एक बार मूतने उठे. रघू आगे चला गया. मैं भी जा रहा था तो रघू बोला. "रुक मुन्ना, अभी मां को जाने दे."

मां बोली. "मंजू, बड़ी जोर से पेशाब लगी है. चल मुझे बाथरूम ले चल. मुझसे चला नहीं जायेगा" वह उठी और मंजू का सहारा लेकर लंगड़ाते हुए धीरे धीरे बाथरूम की ओर निकल पड़ी.

इतने में रघू वापस आ गया. मुझे भी जोर से पेशाब लगी थी. मैं बैठा बैठा कसमसा रहा था. बोला "रघू, जोर से लगी है, मां और मंजू बाई कब आयेंगी? मैं बाहर कर आऊं?"

वह बोला. "अरे उन्हें बहुत टाइम लगेगा. मेरी मां तो फ़टाफ़ट मूत लेती है. तेरी मां को बहुत टाइम लगेगा. बड़े आराम से मजा लेकर मूत रही होगी मालकिन. तुझे लगी है राजा? आ मेरे पास, मैं करा दूं."

मैं समझा कि वह मुझे वहीं खिड़की से बाहर करायेगा. पर उसने मुझे दीवार से सटाकर खड़ा किया और खुद मेरे सामने नीचे बैठ गया. बड़े प्यार से मेरे मुरझाये लंड को उसने चूमा और फ़िर मुंह में लेकर चूसने लगा.

मुझे अच्छा लग रहा था पर बहुत जोर से पेशाब लगी होने से मैं तिलमिला रहा था. रघू का सिर हटाने की कोशिश करने लगा. "रघू दादा, छोड़ो. मुझे मूतना है."

उसने मुझे आंख मारी और मेरा लंड चूसता ही रहा. आखिर जब मैं उसके बाल पकड़कर खींचने लगा तो लंड मुंह से निकालकर बोला. "अरे मूत ना मेरे राजा. मेरे मुंह में मूत."

मैं उसकी ओर देखता ही रह गया. मेरे चेहरे पर का भाव देखकर वह मुस्करा दिया. "सच में मुन्ना. कब से चाहत है तेरा प्यारा कमसिन मूत पीने की. अरे घबरा मत, मैं गटागट पी जाऊंगा."

मैं फ़िर भी शरमा रहा था. समझ में नहीं आ रहा था क्या करूं. रघू फ़िर बोला. "अरे बेटे, उधर तेरी मां भी मेरी मां के मुंह में मूत रही होगी. चल अब नखरा न कर. फ़िर सब बताता हूं" कहकर वह फ़िर मेरी लंड चूसने लगा.

मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था. पर अब इतनी जोर से पिशाब लगी थी कि मैं रघू के मुंह में मूतने लगा. रघू के चेहरे पर एक तृप्ति का भाव उमड़ आया. मेरी कमर में बांहें डाल कर उसने कस कर मुझे चिपटा लिया और अपना चेहरा मेरी रानों में दबा कर वह मेरा मूत पीने लगा.

मूतना खतम होते होते मैं उत्तेजित हो गया. रघू जिस प्यार से स्वाद लेकर मेरा मूत पी रहा था, मुझे बहुत अच्छा लगा. उधर यह कल्पना करके कि मां कैसे मंजू बाई को अपना मूत पिला रही होगी, मुझे और मजा आ रहा था. आखिर में मूतना खतम होने पर मैं रघू का मुंह चोदने लगा. पर उसने मुझे झड़ने नहीं दिया. मुंह से लंड निकालकर खड़ा हो गया और मुझे गोद में लेकर प्यार करने लगा.

"मजा आ गया छोटे मालिक, प्रसाद मिल गया. लंड अब खड़ा रखो. साली मेरी अम्मा की कस कर गांड मारो रात भर. आज रात भर इन दोनों औरतों की गांड मार मार कर फ़ुकला करनी है"

मैंने पूछा. "बताओ ना रघू, ऐसा क्यों करते हो?"

"अरे मजा आता है. असल में बहुत पहले से मेरी मां तेरी मां का मूत पीती है. उसकी दीवानी है. कहती है मालकिन का प्रसाद मिलता है. आखिर तुम लोग हमारे मालिक हो. तुम्हारा नमक खाते हैं. पर इस तरह से नमक पीने में और मजा आता है."

"तो क्या रोज पीती है मंजू बाई मां का मूत?" मैंने आश्चर्य चकित होकर पूछा.

"हां करीब करीब रोज, खासकर जब मस्त चुदाई होती है. तेरी मां भी बड़े मजे से मूतती है. रुक रुक कर बहुत देर प्यार से अपनी नौकरानी को पिलाती है. और एक दो बार मैंने भी पिया है. असल में मेरी मां मुझे पीने नहीं दे रही थी, कहती थी सिर्फ़ उसका हक है. मैंने जिद करके पी लिया. मजा आ गया. जब फ़र्श पर मुझे लिटाकर मेरे सिर के ऊपर उकड़ूं बैठकर तेरी मां मेरे मुंह में मूतती है तो लगाता है जैसे देवीमां का प्रसाद पा रहा हूं. पर यह वरदान बस कभी कभी मिलता है. हां अपनी मां का मूत मैं रोज पीता हूं. पर मेरे मन में हमेशा तेरा मूत पीने की इच्छा थी. तू मुझे इतना प्यारा लगता है. मैं तो बचपन में ही शुरू हो जाता पर मां बोली, चुदाई शुरू हो जाने दे, फ़िर पिया कर. अब सही है. मैं अपने मालिक, तेरा मूत पिऊंगा और मेरी मां अपनी मालकिन का मूत पियेगी."

सुनकर मैं लंड पकड़कर मुठिया रहा था. गरम होकर बोला. "रघू, मैं भी मां का मूत पिऊं?"

"पी लेना बेटे पर अकेले में. आज नहीं. मालकिन को खूब खुश करके फ़िर पूछना, वे मान जायेंगी. वैसे किस मां को अपने बेटे को अपना मूत पिलाने में मजा नहीं आयेगा! मेरी मां तों इस ताक में ही रहती है कि कब मैं उसे अकेला मिलूं और कब वह मेरे मुंह में मूत दे! अब चुप हो जा. दोनों आ रही हैं."

मां और मंजू वापस आये, मंजू मुंह पोछ रहही थी और खुश लग रही थी. मां भी बड़ी तृप्त लग रही थी और मंजू

की कमर में हाथ डालकर उसे अपने पास खींचकर प्यार से चूम रही थी. मेरे और रघू के चेहरे के भाव देखकर दोनों हमारी ओर देखने लगीं. मंजू ने आंख मार कर कहा. "रघू बहुत खुश लग रहा है, क्या बात है?"

रघू चुप रहा और हंसता रहा. मां भी समझ गयी होगी पर कुछ नहीं बोली.

रघू जाकर कुछ बड़े मद्रासी केले ले आया. मंजू को बोला. "अम्मा, अब तुम जरा अपनी मालकिन की सेवा कर लो, मैं मुन्ना को लंड चूसना सिखा दूं" मैं खुशी से उछल पड़ा और रघू से लिपट गया. वह हंसते हुए बड़े प्यार से मुझे गोद में लेकर बैठ गया. उधर मंजू मां को लेकर पलंग पर लेट गयी. पहले तो उन्होंने खूब चूमाचाटी की, फ़िर वे दोनों सीधे सिक्सटी नाइन करने में जूट गयीं. उनका ध्यान हमारी भी ओर था, वे बड़े गौर से देख रही थीं कि रघू कैसे मुझे लंड चूसना सिखाता है.

रघू ने केला छीलते हुए बोला. "बेटे, इसमें कोई बड़ी बात नहीं है, अपने गले को ढीला करना सीख लो बस. अब देख, ये दस इंची मद्रासी केला है, इसे निगलने के प्रैक्टिस कर ले, बिना दांत लगाये, फ़िर मेरा क्या, घोड़े का भी लंड निगल लेगा तू. तेरा अम्मा को भी मेरी अम्मा ने ऐसे ही सिखाया था. याद है ना अम्मा?"

मां की चूत में से सिर उठाते हुए मंजू बोली. "हां बेटे, ये रंडी तो आधे घंटे में सीख गयी थी, मुन्ना भी उसीका चुदैल बेटा है, वो भी फ़टाफ़ट सीख जायेगा देखना."

"चल मुन्ना मुंह खोल, मैं ये केला तेरे मुंह में देता हूं, मुंह बंद नहीं करना. निगलते जाना, जितना हो सके. बस दांत नहीं लगाना." मुझे गोद में बिठाकर रघू मेरे खुले मुंह में केला पेलने लगा.

तीन इंच मोटा वह चिकना केला पहली बार में मैंने करीब एक तिहाई ले लिया और फ़िर मुझे कैसे तो भी होने लगा. रघू ने केला निकाल लिया और मुझे सम्हलने का मौका देकर फ़िर चालू हो गया. "ले ले मुन्ना, समझ मेरा लंड ले रहा है, फ़िर तुझे मजा आयेगा, तू नहीं घबरायेगा."

आखिर मैंने आधे से ज्यादा केला निगल लिया. सात आठ इंच केला मेरे मुंह में था और आधा मेरे गले के नीचे था. मेरा गला बारबार थूक निगलने की कोशिश करता और उससे वह केला और अंदर घुसता जाता. आखिर पूरा केला मेरे मुंह में चला गया, सिर्फ़ एक छोर बचा जो रघू ने पकड़ कर रखा था.

"शाबास मेरे बच्चे, मालकिन, अम्मा, ये तो पांच मिनिट में सीख गया." रघू खुश होते हुए मेरे गाल चूमकर केले को मेरे गले में थोड़ा अंदर बाहर करते हुए कहा. "देख मुन्ना, जब मैं तेरे गले को चोदूंगा तो ऐसे लगेगा. घबराना मत." और वह केले से मेरा गला चोदने लगा.

मां को अब अपने बेटे के नन्हे गाले में अपने चोदू नौकर का तगड़ा लौड़ा घुसते देखने की जल्दी हो रही थी. "मुन्ना, अनिल बेटे, अब निगल ले रे रघू का लौड़ा, आखिर मैं भी देखूं कि इस चुदैल मां के गांडू बेटे में कितना दम है!"

रघू का लंड अब तक खड़ा हो गया था. कस कर नहीं फ़िर भी अच्छा खासा लंबा हो गया था. "एकदम सही खड़ा है बेटे, तुझे भी तकलीफ़ नहीं होगी. आ जा, बैठ जा मेरे सामने." कहकर रघू ने केला मेरे मुंह से निकाल लिया और बाजू में टेबल पर एक प्लेट में रख दिया.

मैं मुंह खोल कर रघू की जांघों के बीच बैठ गया. उसका सुपाड़ा तो मैंने बहुत बारे चूसा था इसलिये उसमें मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हुई. अब रघू ने मेरे सिर के पीछे एक हाथ रखकर उसे सहारा दिया और दूसरे हाथ से अपना लंड पकड़कर पेलने लगा.

लंड आराम से मेरे गले में धंसने लगा. केले से मेरा मुंह और गला भी चिकने हो गये थे इसलिये आराम से लंड मेरे मुंह में उतर रहा था. जल्द ही आधे से ज्यादा लंड मेरे मुंह में था. सुपाड़ा अब मेरे गले को चौड़ा कर रहा था. मेरा दम अब कुछ घुट रहा था पर मैं फ़िर भी लंड निगलने की भरसक कोशिश कर रहा था. पर लंड अब अंदर सरकना बंद हो गया था.

रघू ने कुछ देर लंड पेलना बंद कर दिया. मेरे बाल सहलाते हुए बोला. "कोई बात नहीं मुन्ना, आज काफ़ी सीख गया है, अब बस कुछ देर ऐसा ही बैठा रह, फ़िर मैं निकाल लूंगा, तू बस गले को ढीला छोड़ और लंड को गले में रखने की प्रैक्टिस कर"

मैं रघू का लंड मुंह में लिये बैठा रहा. अब गले में फ़ंसे उस मांसल कड़े होते हुए लंड से मेरा जी घबरा रहा था पर मजा भी आ रहा था. लगता था लंड नहीं रसीला गन्ना है.

मंजू बोली. "निकाल ले बेटा, अब आ और अपनी मालकिन की गांड मार ले फ़िर से"

"आता हूं अम्मा, मुन्ना के मुंह से लंड तो निकाल लूं. मुन्ना, तू गला ढीला छोड़ बेटे" मैंने गला भरसक ढीला किया और लंड मुंह से निकालने के बजाय रघू ने मेरा सिर पकड़कर सहसा कस कर अपने पेट पर दबाते हुए अपने चूतड़ों के एक जोरदार धक्के से पूरा लंड जड़ तक मेरे मुंह में उतार दिया. मेरे होंठ रघू के पेट पर आ टिके.

मुझे लगा जैसे मेरा दम घुट जायेगा. सांस लेना दूभर हो गया और गला अपने आप खुल बंद होने लगा. मेरे छटपटाने को नजरंदाज करते हुए रघू ने मेरा सिर कस कर अपने पेट पर दबाये रखा और आगे पीछे होकर मेरा मुंह चोदने लगा.

मेरी बेचैनी देखकर मंजू हंसने लगी. "कैसा उल्लू बनाया उसे. मुन्ना सोच रहा होगा कि तू लंड बाहर निकाल रहा है."

मां बोली. "अरे देख कैसे कर रहा है! उसे सांस तो लेने दे"

रघू बोला. "आप चिंता न करो मांजी. याद नहीं आपको भी ऐसे ही किया था तब जाकर आप पूरा लंड मुंह में लेना सीखी थीं. अभी देखो दो मिनिट में मुन्ना शांत हो जायेगा और फ़िर प्यार से चूसेगा मेरा लौड़ा"

उसने मेरा सिर कस कर दबाये रखा और बिना किसी दया के मेरा मुंह चोदता रहा. आखिर मेरा गला अपने आप फ़ैलकर उसके मोटे लंड के इर्द गिर्द बैठ गया. मेरे थूक की वजह से गला एकदम चिकना भी हो गया था. उसमें रघू का लंड फ़िसल रहा था. सुपाड़ा किसी पिस्टन जैसा गहरा मेरी छाती में मेरी निगलने की नली को चौड़ा कर रहा था.

उस मोटे लंड को चूसने में अब मुझे बहुत मजा आ रहा था. लग रहा था कि अभी उसमें से वीर्य निकले तो मैं सब पी जाऊं.

रघू ने मेरा गला और कुछ चोदा और फ़िर लंड निकाल लिया. मैं झल्लाया क्योंकि रघू के लंड का मैं दीवाना हो चुका था, उसका रस पीना चाहता था. पर रघू ने समझाया. "अब तेरी मां की गांड मारनी है राजा. आज मैंने प्रण लिया है कि मालकिन की रात भर मारूंगा. लंड कहां जाता है रे, तुझे फ़िर चुसा दूंगा. अब तो तू लेना भी सीख गया. एक और तरीका है लेने का, बड़ा मजेदार और हौले हौले, उसमें ज्यादा तकलीफ़ भी नहीं होती, वह तुझे बात में सिखा दूंगा."

मेरे मुंह से लंड निकालकर रघू ने मां की गांड में फ़िर से ढेर सा मख्खन लगाया और शुरू हो गया. मैं भी मंजू पर टूट पड़ा. उस रात कोई नहीं सोया. बस ऐसे ही हम दोनों बेटे उन चुदैल माताओं की गांड चोदते रहे. रघू ने तो मां की हालत खराब कर दी. रात भत उसकी गांड से लंड नहीं निकाला. मां को दबोच कर उसपर शिकारी जैसा चढ़ा रहा. हचक हचक कर गांड मारता, झड़ता और आराम करने लगता. लंड खड़ा होते ही फ़िर जुट जाता. मां अब अधमरी सी लस्त पड़ी हुई चुपचाप मरा रही थी.

मैंने भी मंजू की गांड एक बार मारी पर उसके बाद वह अपनी चूत में मेरा मुंह लेकर लेट गयी और रात भर मुझसे चुसवाती रही. "तेरा यह कमसिन मुंह है ही इतना कोमल और प्यारा कि चोदने को ही बना है राजा. मैं या मेरा बेटा इसे हमेशा चोदा करेंगे मुन्ना, नहीं तो मन नहीं भरता हमारा."

सुबह एक बार फ़िर उसने मुझे अपनी गांड चोदने दी. बाद में हमने अपनी अपनी मां की गांड जीभ से साफ़ की और उसमें से वीर्य चूसा. मुझे बहुत माल मिला, मां की गांड में से आधी कटोरी के करीब रघू का वीर्य मैंने चूसा होगा.

उस दिन सब इतने थक गये थे कि दिन भर सोये. रात को भी कोई चुदाई नहीं हुई. दूसरे दिन से हमारी चुदाई सधे ढंग से चल पड़ी. सामूहिक चुदाई अब बस हफ़्ते में एक दो बार किसी किसी रात को होती थी. मां ने ही कहा कि बार बार करने से मजा चला जायेगा. हां अकेले में जोड़ी बनाकर हम कभी भी चोद लेते थे.

दोपहर को मैं अक्सर मां के कमरे में सोता. उसका दूध पीते हुए उसे चोदता या उसकी चूत चूसता. मां के गोरे मांसल शरीर को चूमना मुझे बहुत अच्छा लगता था. जब भी मौका मिलता मैं उसकी गोरी पीठ, नितंब या जांघों और पेट को चूमता. नितंबों के बीच मुंह छुपाकर मां का गुदा चूसना भी मेरा मनपसंद शौक बन गया था. वह मुझपर बहुत खुश थी. मुझे अपनी बुर चुसाना और दूध पिलाना उसे बहुत अच्छा लगता था. मेरा लंड भी वह खूब चूसती थी. अपने कमसिन बेटे के वीर्य का स्वाद उस मस्त कर देता था.

मां की गांड मारने मुझे कम मिलती. जब वह बहुत मूड में होती थी या जब मैं उसे चूस कर या चोद कर खुश कर देता था तभी मारने देती. वह अपनी गांड का इस्तेमाल इनाम जैसे करने लगी थी. बात यह थी कि रघू अब उसकी गांड के पीछे दीवाना था. मां को उससे मराना ही पड़ती थी नहीं तो वह मां को न चोदता, न लंड चूसने देता. मां तो उसके लंड की दीवानी थी. इसलिये मन भर कर चुदाने के बाद इनामस्वरूप अपनी गांड दे देती रघू को.

मंजू ने तो मुझे अपनी चूत का गुलाम बना लिया था. अपनी मालकिन के बेटे से बुर चुसवाने में उसे बहुत मजा आता. बस जब भी हमारी जोड़ी जमती, मेरी सिर अपनी जांघों में दबाकर शुरू हो जाती. घंटों चुसवाने के बाद मुझे अपनी गांड मारने देती.

रघू से मेरा संभोग कई बार होता. अब स्कूल जाते समय वह मुझे नहीं भोगता था क्योंकि घर में आराम से वह कभी भी मेरे ऊपर चढ़ सकता था. हां बीच में साइकिल रोक कर मेरा मूत पी लेता. जब मां और मंजू आपस में जोड़ी बनाकर कमरे में घुस जाते तो रघू मेरे कमरे में आ जाता. वह मेरी गांड का दीवाना था ही, घंटों मेरी गांड मारता. और मुझसे मरवाता. मुझसे गांड मरवाने में उसे बहुत मजा आता. मैं भी मन लगाकर बिना झड़े उसकी गांड खूब देर तक मारता और उसे संतुष्ट कर देता.

अब रघू मेरा मुंह भी चोदता. खड़ा लंड धीरे धीरे कैसे निगलना यह तो उसने सिखा दिया था. अगली बार जब हम दोनों अकेले थे तो उसने दूसरा तरीका भी मुझे सिखा दिया. मेरी गांड मारने के बाद उसने अपना झड़ा लंड मेरे मुंह में दे दिया और बिस्तर पर मेरे बाजू में लेट गया. अपनी जांघों में मेरा सिर उसने जकड़ लिया और प्यार से मुझसे अपना झड़ा लौड़ा चुसवाता रहा.

पहले उसका झड़ा लंड बड़े आराम से पूरा मेरे मुंह में आ रहा था. नरम नरम गाजर जैसे उस लौड़े को जीभ पर लेकर मैं चूसता रहा. फ़िर धीरे धीरे वह खड़ा होने लगा. यह भी बड़ी सुखद अनुभूति थी. रघू का लंड कड़ा होते हुए आगे सरककर मेरे मुंह में और गहरा घुसता जा रहा था.

जल्द ही वह मेरे गले में पहुंच गया. रघू के सिखाये अनुसार मैंने गला ढीला छोड़ रखा था इसलिये मुझे जरा भी तकलीफ़ नहीं हुई, आराम से उसका दस इंची मैंने गले में ले लिया.

रघू बहुत खुश हुआ. "क्या बात है मुन्ना, अब बना है तू मेरा पूरा गांडू चुदैल गुड्डा. पर अब तेरा मुंह चोदूंगा. तू चूसता रह." कहकर मुझे पलंग पर लिटा कर मेरे ऊपर लेटकर वह मेरा मुंह चोदने लगा.

उसने मन भर कर मेरा मुंह चोदा जैसे चूत चोद रहा हो. अंत अंत में तो वह कसकर धक्के लगाता हुआ मेरे गले में अपना लंड चला रहा था. मेरा दम घुट रहा था, उसके पेट ने मेरे चेहरे को पूरा ढक लिया था पर मैं उसके चूतड़ों को बांहों में भर कर उसकी गांड में उंगली करता हुआ मुंह चुदवाता रहा. रघू झड़ा तो उसका वीर्य सीधे मेरे पेट में गया जबकि मैं उसका स्वाद चखना चाहता था. मैंने बाद में उससे शिकायत की तो वह मेरा चुम्मा लेकर बोला कि अगली

मां मेरी ओर देखती रही. "तुझे रघू ने बताया शायद. बदमाश कहीं का! मैं उसी दिन रात को समझ गयी थी. उसने तेरा मूत पिया?"

मैंने मां को सब बता दिया. वह मुस्कराती रही. "अरे बड़े चुदैल हैं दोनों मां बेटे! मैंने बहुत दिन पहले जब तू छोटा था, एक दिन चिढ़ कर मंजू को नौकरी से निकाल दिया था. मेरी चूत पर इतनी फ़िदा थी वह कि बार बार मेरी बुर चूसते समय काट खाती थी. एक बार तो मेरे पपोटे से खून निकल आया था. मैंने जब गुस्से में आकर निकाल दिया तो रोने लगी. तब मैंने जान बूझ कर उसे सजा देने को कहा कि मेरा मूत पिये तो नौकरी पर रख लूंगी. पर सजा के बजाय ये उसके लिये इनाम हो गया. ऐसे मस्त होकर उसने मेरा मूत पिया कि मुझे भी मजा आने लगा उसे मूत पिलाने में."

थोड़ा रुक कर मां आगे बोली. "बहुत अच्छा लगता है मुझे उसके मुंह में मूतकर. लगता है उसपर एहसान कर रही हूं. ऐसे पीती है जैसे शरबत हो. वो रघू भी दीवाना है पर मंजू मेरे मूत पर अपना अधिकार समझती है, रघू को बस कभी कभी पीने देती है. अपने बेटे को अपना मूत पिलाती है और उसे कहती है कि वह अपने मालिक का याने तेरा मूत पिये. इसलिये जब से वह तुझे चोदने लगा, मैं समझ गयी थी कि अब वो दिन दूर नहीं जब रघू तेरा मूत पीने लगेगा. पर बेटे, उनका ठीक है, वे अपना नौकरों का कर्तव्य कर रहे हैं. तू क्यों मेरा मूत पीने की जिद कर रहा है?"

मैंने सिहर कर कहा. "मां, तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो. मैं तुम्हारे शरीर का हर रस चखना चाहता हूं. तुंहारी गोरी गोरी मोटी मोटी बुर इतनी रसीली लगती है कि मैं पेट भर कर उसमें से शरबत पीना चाहता हूं. पिलाओ ना मां, मेरी कसम, तुम जो कहोगी मैं करूंगा."

मां मेरी ओर देखती रही. उसकी आंखों में बड़ा दुलार और वासना थी. जब उसने देखा कि मैं सच में उसका मूत पीना चाहता हूं तो वह मुझे बाहों में भर कर बेतहाशा चूमने लगी. "चल मेरे लाल, मेरे बच्चे, तेरी ये इच्छा पूरी कर देती हूं. बोल कैसे पियेगा? गिलास में दूं?"

मैं मचल कर बोला. "नहीं अम्मा, मैं तो आपकी बुर से सीधे पिऊंगा. औरतें बैठ कर मूतती हैं वैसे मेरे सिर पर बैठकर मूतो. चलो ना बाथरूम में."

मां को हाथ से पकड़कर खींचता हुआ मैं बाथरूम ले गया. वह हंसती हुई मेरे पीछे पीछे खिंची चली आई. उसे बहुत अच्छा लग रहा था कि उसका लाड़ला उसके मूत का इतना दीवाना हो गया है. बाथरूम में मैं तुरंत जमीन पर लेट गया और मां को खींचकर बोला. "जल्दी आओ मां, बैठो मेरे मुंह पर"

मां बड़ा नखरा करते हुए आराम से मेरे सिर के दोनों ओर पैर जमा कर बैठ गयी. उसकी बुर अब मेरे मुंह के ऊपर लहरा रही थी. बुर में से रस टपक रहा था, अम्मा बहुत मस्ती में आ गयी थी. "मंजू और रघू भी ऐसे ही पीते हैं. कभी कभी उन्हें खड़े खड़े भी पिलाती हूं. तुझे बाद में पिलाऊंगी वैसे. मुझे उसमें ज्यादा मजा आता है. लगता है जैसे मैं कोई देवी या रानी हूं और अपने भक्त को सामने बिठा कर अपना प्रसाद दे रही हूं. चल मुंह खोल अब, इतना मूतूंगी तेरे मुंह में कि तुझे पिया नहीं जायेगा. और गिराना नहीं नहीं तो फ़िर कभी नहीं पिलाऊंगी."

"मां, मैं एक बूंद भी नहीं गिरने दूंगा आपके शरबत की" कहकर मैंने मुंह खोला और मां बड़ी सावधानी से निशाना लेकर उसमें मूतने लगी. खलखलाती एक तेज धार मेरे मुंह में गिरने लगी. मैंने मूत मुंह में ही भर लिया. मां ने मूतना बंद कर दिया. झल्ला कर बोली. "अब निगलता क्यों नहीं मूरख? गुटक जा जल्दी से."

मैंने मुंह बंद किया और मां के उस खारे कुनकुने मूत का स्वाद लेने लगा. मेरा लंड ऐसे उछल रहा था जैसे झड़ जायेगा. स्वाद ले कर आखिर मैंने मूत निगला और मां को बोला. "जली नहीं करो अम्मा, मैं मन लगाकर चख कर पिऊंगा आपका मूत"

मां हंसने लगी. "बिलकुल मंजू जैसा करता है तू. वह भी कभी कभी आधा घंटा लगा देती है मेरा मूत पीने में. ठीक है, आज धीरे पिलाती हूं पर समझ ले मेरे लाल, अब से मेरा मूत तुझे ही पिलाऊंगी. मंजू तो कभी कभी पीती है, पर तू तो मेरे साथ ही रहेगा. जब पिशाब लगेगी, तेरे मुंह में करूंगी. बोल है मंजूर?"

मैं तो खुशी से उछल पड़ा. मां ने अगले दस मिनिट मुझे बहुत प्यार से अपना मूत पिलाया. बीच में वह थक कर उठ कर दीवाल से टिक कर खड़ी हो गयी. "पैर दुख रहे हैं बेटे आज़ अब खड़े खड़े पिलाती हूं. आ जा मेरी टांगों के बीच बैठ जा और मुंह ऊपर करके मेरी बुर से सटा दे. देख कैसे मस्त पिलाती हूं. और अब जरा जल्दी जल्दी पी, मैं जोर से मूतूंगी अब."

मैं मां की टांगों के बीच पलथी मार कर बैठ गय और उसकी टांगें पकड़कर अपना चेहरा ऊपर करके मां की बुर को मुंह में ले लिया. मेरे सिर को कसकर अपनी बुर पर दबा कर मां मूतने लगी. अब वह जोर से मूत रही थी और उसकी धार सीधे मेरे गले के नीचे उतर रही थी. मैं भी गटागट पी रहा था. मां अब इतना उत्तेजित हो गयी थी कि मूतना खतम होने पर भी मुझे नहीं छोड़ा और खड़े खड़े ही ऊपर नीचे होकर उसने मेरे मुंह पर मुठ्ठ मार ली.

हम बाथरूम के बाहर निकले तो मंजू सामने थी. झाड़ू लगा रहा थी. साली हमें देखते ही समझ गयी. खिलखिलाकर हंसते हुए बोली. "चलो, अखिर बेटे को भी अपना प्रसाद पिला दिया मालकिन. मेरा भी खयाल रखना, नहीं तो मुझे प्यासा रखोगी आप."

मां बोली. "तू चुप रह, बहुत शरबत है मेरे पास. सारे खानदान को पिला सकती हूं. तुझे भी पिलाऊंगी पर अब मुन्ना का हक पहले है. है ना मेरे राजा?" कहकर लाड़ से उसने मुझे चूम लिया. फ़िर मेरे लंड को पकड़कर मुझे वापस अपने कमरे में ले गयी. बोली "इतना मस्त खड़ा हो गया मुन्ना तेरा फ़िर से? लगता है मेरे मूत का असर है. ऐसी बात है तो अब तुझसे चाहे जितना चुदा सकती हूं मैं. जब तू लस्त पड़ेगा तो अपना यह गरमागरम शरबत पिलाऊंगी और मस्त कर दूंगी तुझे. चल अब मैं फ़िर चुदा लूं एक बार अपने राजा बेटा से!"

मैं तो मां के मूत का दीवाना हो गया. मां ने वायदे के अनुसार मुझे रोज पिलाना शुरू कर दिया. जब भी मूड में होती और मैं घर में होता तो मुझे पास बुलाकर बाथरूम में ले जाती. कुछ दिन बार तो मैं इस सफ़ायी से पीने लगा कि बाथरूम जाने की भी जरूरत नहीं पड़ती थी. कहीं भी मां की बुर से मुंह लगा लेता और वह उसमें मूत देती. मंजू को चिढ़ाने को वह जानबूझकर उसके सामने मेरे मुंह में मूतती.

अब जब सामूहिक चुदाई होती तो हमसब एक साथ बाथरूम जाते. बहुत मजा आता था. मां मंजू के मुंह पर मूतने बैठ जाती थी और रघू मेरा लंड मुंह में लेकर मेरा मूत पी लेता था.

बाद में अक्सर हम अदल बदल कर लेते थे. मां रघू के मुंह में मूतती और मैं मंजू के मुंह में. पहले मुझे बहुत अटपटा लगा. मंजू बाई नौकरानी भले ही हो, पर औरत थी और वह भी मस्त चुदैल औरत जिसने मुझे बहुत सुख दिया था. उसके मुंह में मूतना मुझे ठीक नहीं लग रहा था. पर उसीने मुझे समझ्याया. "शरमा मत मुन्ना, तू इतना प्यारा है, एकदम गुड्डे जैसा. तेरा मूत तो मेरे लिये तेरी मां के मूत जैसा ही मजेदार है. मूत ना राजा, पिला दे इस नौकरानी को उसके हक का शरबत!"

अखिर मां ने भी समझाया और मैंने मंजू के मुंह में मूता. मंजू ने भी बड़े चाव से उसे निगला. मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि मंजू जिस प्यार और दुलार से मेरा मूत पीती थी उससे मैं समझ गया था कि मेरे और मां के प्रति उसकी वासना कितनी गहरी थी. अब कई बार वह मेरा मूत चुपचाप पी लेती. बहुत बार तो जब मुझे नींद से जगाने आती, तो मेरा लंड चूस कर मेरा मूत पी कर की मुझे जगाती और फ़िर उठने देती.

बाद में एक बार जब मां बाहर गयी थी और मैं और मंजूबाई घर में अकेले थे, मैंने उसका मूत पीने की बहुत जिद की. मंजूबाई के कसे सांवले शरीर और उसके बुर रस का तो मैं दीवाना था ही, सोचा जहां से इतना मस्त शहद निकलता है वहां का शरबत भी मादक होगा ही. इसलिये उसका मूत पी कर देखने की मुझे बहुत इच्छा थी.

वह पहले तैयार नहीं हो रही थी, कह रही थी कि ये तो पाप होगा. पर इस कल्पना से कि वह अपनी मालकिन के बेटे, अपने छोटे मालिक को अपना मूत पिलाये, वह कितनी उत्तेजित थी यह मुझे तब पता चला जब आखिर मेरे खूब गिड़गिड़ाने और मिन्नत करने पर कि मां को नहीं बताऊंगा, वह आखिर मेरे मुंह में मूतने को तैयार हो गयी. साली की बुर इतनी चू रही थी कि जांघों पर रस बह कर टपक रहा था. पहले तो मुझे लगा कि उसने शायद पिशाब

कर दी हो पर फ़िर पता चला कि वह उसकी चूत का पानी था.

साली को मेरे खुले मुंह को अपनी बुर से चिपका कर उसमें मूतने में बहुत मजा आया, ऐसी गरम हो गयी थी कि मूतना खतम होते ही मेरे मुंह पर सवार होकर मुठ्ठ मारने लगी. मुझे भी मंजू बाई के मूत का स्वाद उत्तेजक लगा, मां के मूत से अलग था, ज्यादा खारा सा था पर मजेदार था.

बाद में मैं यह कई बार करने लगा. मां को नहीं बताया कि वह नाराज न हो जाये. मंजू तो फ़िदा हो गयी थी मुझपर, जब भी मैं कहता हाजिर हो जाती. उसने भी यह बात रघू से छुपा कर रखी. मेरे मुंह में मूतना उसके लिये इतना मस्त काम था कि वह यह उसे पूरा गुप्त रखना चाहती थी.

हमारी चुदाई अब सधे ढंग से चलने लगी थी, जैसे आम बात हो. हमारी टाइम टेबल जैसा भी बन गया था. अक्सर हम तरह तरह के खेल खेलते. कभी कभी सिर्फ़ गांड मराई होती. रात भर हमारी रंडी माएं एक दूसरी की बुर चूसतीं और हम दोनों बेटे उनपर चढ़कर उनकी गांड मारते. कभी कभी 'एक एक पर तीन तीन' खेल होता. इसमें किसी एक को निशाना बनाकर बाकी तीनों उसपर चढ़ जाते और तीनों ओर से याने चूत या लंड, गांड और मुंह में से एक साथ चोदते. मां या मंजू पर चढ़ते समय मैं और रघू आगे पीछे से दोनों छेदों से उन्हें एक साथ चोदते और मुंह में बची हुई औरत की चूत होती. मैं या रघू जब निशाना बनते तो गांड में लंड होता और मुंह और लंड पर मां या मंजू बाई होती.

हम लोगों के इस मस्त जीवन में अगला मोड़ करीब एक साल बाद आया. और वह भी ऐसा मोड़ जिसके अतिशय विकृत पर मादक आनंद की मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी.

--- समाप्त ---